42ed ALL INDIA SOCIOLOGICAL CONFERENCE

DECEMBER 27-30, 2016
DEPARTMENT OF SOCIOLOGY
TEZPUR UNIVERSITY
Napaam, Sonitpur Assam, India - 784028

ISS Membership No. - **LMI - 1581**
Number & Name of RC- **09, Dalits & Backward Classes**
Tittle of Abstract - **अन्य पिछड़ा वर्ग : परम्परा और परिवर्तन (OBC : Tradition & Change)**
Name & Address - **डा0 आलोक कुमार**
सहायक प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, पार्वती साइन्स कॉलेज, मधेपुरा
(भूपेन्द्र ना0 मंडल विश्वविद्यालय, मधेपुरा – 852113 (बिहार))

संक्षेपिका (Abstract)

अन्य पिछड़ा वर्ग : परम्परा और परिवर्तन

(Other Backward Classes : Tradition & Change)

समूह विशेष के लोगों के बीच व्यवहार के ढंग, रूचियाँ, विश्वास, मूल्य, प्रथा व सोचने–समझने का ढंग जो उसे समाजीकरण की प्रक्रिया के द्वारा प्राप्त होते हैं, परम्परा कहलाती है। सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया के परिणामस्वरूप परम्परा अनेकानेक सामाजिक–सांस्कृतिक कारकों से प्रभावित होती है।

प्रस्तुत अध्ययन में अन्य पिछड़े वर्ग से सम्बन्धित परम्परा और परिवर्तन को सामाजिक–सांस्कृतिक संदर्भों में समझने का प्रयास किया गया है।

प्रस्तुत आलेख बिहार (ग्राम–सुखासन, अंचल–कुमारखंड, जिला–मधेपुरा) के अध्ययन पर आधारित है। अध्ययन में साक्षात्कार, अवलोकन के साथ–साथ द्वितीयक स्रोतों की सहायता ली गयी है।

ग्रामीण जीवन का कोई भी पक्ष ऐसा नहीं है, जिसके पारम्परिक स्वरूप में परिवर्तन नहीं हुआ है। यथा, जातिगत सम्बन्ध, संयुक्त परिवार, नातेदारी व्यवस्था, विवाह, रस्म–रिवाज, रहन–सहन व जीवन शैली आदि। लोकतांत्रिक व्यवस्था के तहत् सत्ता में भागीदारी महत्त्वपूर्ण सामाजिक परिवर्तन है। बिहार की राजनीति में विगत ढाई दशकों से अन्य पिछड़ा वर्ग राजनीति के केन्द्र में है। इस अवधि में सामाजिक–सांस्कृतिक परिवर्तन की अन्य प्रक्रियाओं के अलावे लोकतांत्रिकरण (वयस्क मताधिकार) और नगरीय सम्पर्क ने परम्परा को विशेष रूप से प्रभावित किया है। परिणामस्वरूप परम्परा के आंतरिक और वाह्य दोनों स्वरूपों पर परिवर्तन का प्रभाव देखने को मिलता है। प्रो0 श्यामचरण दूबे के अनुसार, "परम्परा का बदलना स्वयं में एक परम्परा है।"

निष्कर्षतः, सामाजिक परिवर्तन की विभिन्न प्रक्रियाओं के फलस्वरूप परम्परा में हो रहे परिवर्तनों को समग्रता में समझने की आवश्यकता है।

स्थान– मधेपुरा (बिहार)
तिथि– 18.10.2016

आलोक कुमार 18.10.2016
(आलोक कुमार)

सम्पर्क– गिरिवर निवास, भूपेन्द्र चौक, वार्ड न0–07, मधेपुरा – 852113 (बिहार)

दलित महिलाओं की स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याऐं

स्वास्थ्य मानव जीवन की एक अनमोल सम्पति है। स्वास्थ्य का अर्थ है– स्वयं में स्थिर। सामान्यत स्वास्थ्य से तात्पर्य बिमारियो से मुक्त होने से समझा जाता है परन्तु वैज्ञानिक द्वष्टि से इसे स्वस्थ्य नहीं कहा जाता है। स्वास्थ्य होने का तात्पर्य शारीरिक, मानसिक, अध्यात्मिक एवं सामाजिक रूप से स्वस्थ होने से है। स्वास्थ्य एवं निरोग रहने वाली प्रवृत्ति ही व्यक्ति को सुखमय जीवन जीने में सहायक बनती हैं। स्वास्थ्य मनुष्य ही परिवार समाज व राष्ट्र का निर्माण करता है तथा आर्थिक उत्रति व विकास में अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करता हैं। किसी भी परिवार की धुरी महिला होती है उसकी स्वास्थ्य स्थिति का सीधा प्रभाव परिवार के सदस्यो पर पड़ता है जब बात दलित महिलाओं की होती है तो इनका स्वास्थ्य अत्यन्त दयनीय देखी जाती है। दलित महिलाओं का परिवार साधन रहित होता हैं। उनकी अर्थव्यावस्था मजदूरी वेगारी व कृषि पर आधारित होता है। वे घरेलू काम–काज के साथ–साथ म्जदूरी बेगारी व कृषि के कार्यो में भी हाथ बटाती है और इसके साथ–साथ दिन–रात मातृत्व की भी भूमिका को निभाती होती है। व इन सभी कार्यो में निरन्तर लगी रहती हैं। जिस कारण वह स्वय के स्वास्थ्य पर ध्यान नहीं दे पाती है। दलित महिलाओं में स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याऐं निम्न प्रकार हैं–

- लिंगभेद
- पितृसत्तात्मक समाज
- महिला हिंसा
- रीति–रिवाज व परम्पराए
- महिला साक्षरता
- धार्मिक प्रतिबन्ध
- बाल विवाह
- शोषण
- ग्रीबी
- अन्धविश्वास
- अत्यधिक कार्य बोध

अतः परिवार में महिलाओं का स्वास्थ्य अत्यधिक महत्वपूर्ण विषय है।